1978 में राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल अभयारण्य की स्थापना हुई थी। क्या इस अभयारण्य में घड़ियालों को पर्याप्त 'अभय' प्राप्त है? प्रमोद भार्गव का सवाल है

क्यों मर रहे हैं चंबल के घड़ियाल?

कुख्यात दस्यु सरगनाओं और पुलिस मुठभेड़ों के लिए अभिशप्त रहे चंबल के बीहड़ आजकल घड़ियालों के लिए अभिशप्त बने हुए हैं। इस नदी के किनारों पर नवंबर, 2007 से जनवरी, 2008 तक 68 घड़ियाल मरे पाए जा चुके हैं। आधुनिक संसाधनों और पशु चिकित्सा दलों से लैस मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश का वन महकमा इस लेख के लिखे जाने तक यह स्पष्ट नहीं कर पाया है कि इस भारी-भरकम जीव की मौत की वजह कोई महामारी है या शिकार का नाजायज़ कारोबार? हालांकि वन अधिकारी मौत का कारण चंबल के ज़हरीले पानी से हुए लीवर सिरोसिस और वायरल इन्फेक्शन को बता रहे हैं। लेकिन चंबल के पानी की जांच के बाद ये दावे झूठे निकले। जो परस्पर विरोधी बयान सामने आ रहे हैं उनसे लगता है कि घड़ियालों की मौत के कारण का स्पष्ट एवं संदेह से परे खुलासा होना मुश्किल ही है।

राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल अभयारण्य घड़ियालों की लुप्त होती प्रजाति को संरक्षित करने के मकसद से 1978 में बनाया गया था। भारतीय घड़ियाल विश्व में उपलब्ध सरीसृप प्रजातियों में अनूठी और दुर्लभ है। मगरमच्छ बिरादरी के जीवों में घड़ियाल सबसे बड़ा प्राणी है। इसे अंग्रेजी में *गेविएलिस गैंजेटिकस* कहा जाता है। इसका अर्थ है गंगा नदी में पाया जाने वाला घड़ियाल। हालांकि घड़ियाल गंगा के अलावा म्यांमार, बर्मा और नेपाल में भी पाए जाते हैं।

1974 में प्रसिद्ध वन्य प्राणी विशेषज्ञ डॉ. बस्टर्ड ने एक गंभीर अध्ययन के बाद पाया कि भारत व नेपाल में घड़ियालों की कुल संख्या 60-70 के करीब है। डॉ. बस्टर्ड की रिपोर्ट के आधार पर भारत सरकार ने घड़ियालों पर एक अध्ययन कराया। हालांकि भारत सरकार ने 1972 में ही इसके शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था। इस अध्ययन की रिपोर्ट 1978 में आई।

अध्ययन में पाया गया कि पूरे भारत में करीब तीन सौ घड़ियाल अपने प्राकृतिक आवासों में जीवित हैं। जिनमें आधे चंबल नदी के प्राकृत वासों में हैं।

इसी रिपोर्ट के आधार पर केंद्र सरकार की पहल पर 20 दिसंबर 1978 को एक अधिसूचना जारी कर मध्य प्रदेश सरकार ने राष्ट्रीय चंबल घड़ियाल अभयारण्य की स्थापना की। इसका मुख्यालय मुरैना ज़िले के देवरी गांव और उत्तर प्रदेश के कुकरैली गांव में बनाया गया।

1978 से शुरू हुई इस घड़ियाल परियोजना को 1983 तक केंद्र सरकार ने संचालित किया। इसके अंतर्गत विशेषज्ञों ने चंबल किनारे की रेत से घड़ियालों के अंडे तलाशे जिन्हें यहां से उठाकर देवरी के कृत्रिम प्रजनन केंद्र में उचित तापमान देकर सेया गया। एक निश्चित अवधि के बाद अंडों से निकले बच्चों को देवरी व कुकरैली के कुंडों में पाला-पोसा गया। जब ये बच्चे एक से दो मीटर लंबे हो गए, तब इन्हें चंबल नदी के प्राकृत वासों में छोड़ दिया गया।

वैसे तो इस परियोजना को 1983 में राज्य सरकार को सौंप दिया जाना था लेकिन ऐसा संभव नहीं हुआ और परियोजना को 1988 तक केंद्र सरकार ही चलाती रही। इस दौरान देवरी केंद्र द्वारा जारी रिपोर्टों के अनुसार कुल 3205 अंडों का संग्रहण किया गया। इनमें 2644 अंडे घड़ियाल पुनर्वास केंद्र लखनऊ को दिए गए थे। लखनऊ और देवरी के केंद्रों में अंडों से निकले घड़ियालों के कुल 1169 जीवित बच्चे 1978 तक चंबल में छोड़े गए थे।

1992 तक यह संख्या दो हज़ार तक पहुंच गई थी।

यह अभयारण्य 132 ग्राम पंचायतों के चार सौ गांवों में फैला हुआ है। अभयारण्य क्षेत्र मुरैना और भिंड ज़िलों की सीमा में बहने वाली चंबल नदी की 423 किलोमीटर लंबी पट्टी है। इस पट्टी से लगी एक किलोमीटर की चौड़ाई में आने वाली लाखों बीघा सिंचित और उपजाऊ भूमि है। चंबल के किनारों पर रेत के भंडार हैं जो भवन निर्माण में काम आती है।

दरअसल यह उपजाऊ भूमि और रेत के भंडार घड़ियालों के लिए संकट हैं। इस इलाके में आदमी और घड़ियाल के बीच संघर्ष छिड़ा रहता है। शिकारियों की मार इन्हें अलग से झेलनी होती है। किसानों को बेदखल करने और रेत के दोहन पर प्रतिबंध की घोषणाएं प्रशासन और वन अधिकारी गाहे-बगाहे करते रहते हैं। नतीजतन रेत माफियाओं और ग्रामीणों का कहर घड़ियालों पर टूटता है - न रहे बांस और न बजे बांसुरी। करैरा और घाटीगांव का 'सोनचिरैया' अभयारण्य इसी तरह सोनचिरैया का वजूद खत्म करके बर्बाद किया गया था। अब लगता है घड़ियाल अभयारण्य की बारी है।

यदि चंबल का ज़हरीला पानी घड़ियालों की मौत का कारण रहा होता, तो चंबल में पल रही मछलियां भी बड़ी तादात में मरतीं। परंतु एक भी मछली मरी नहीं पाई गई। चंबल में डॉल्फिन भी हैं पर वे भी मरी नहीं मिलीं। चंबल का तथाकथित ज़हरीला हो चुका पानी जब घड़ियाल को मार सकता है तो उससे आदमी कैसे बचा रह सकता है? चंबल की जिस पट्टी पर घड़ियाल मरे पाए गए हैं उस पट्टी के इर्द-गिर्द बड़ी आबादी भी इसी जीवनदायी पानी का सेवन करती है। लेकिन किसी आदमी के बेहाश हो जाने तक की खबर नहीं है। कहीं ये बहाने शिकारियों और रेत माफिया की करतूतों पर पर्दा डालने के लिए तो नहीं हैं, जो घड़ियाल अभयारण्य के अस्तित्व के लिए अर्से से संकट और चुनौती बने हुए हैं?

उत्तर प्रदेश के वन विभाग ने पहली खेप में मरे 16 घड़ियालों की मौत का कारण चंबल नदी का पानी ज़हरीला हो जाना बताया था। हालांकि इन सभी घड़ियालों के शव रेत में धंसे मिले थे। इससे संदेह और गहरा जाता है। इनकी पोस्ट मार्टम रिपोर्ट के बाद खुलासा किया गया कि इन्हें लीवर सिरोसिस नामक बीमारी थी। यह बीमारी अभी तक आदमियों में ही पाई गई है। यह अत्यधिक शराब पीने या संक्रमण की वजह से होती है। इसमें लीवर खराब हो जाता है और सिरोसिस के शिकार व्यक्ति के बचने की संभावना कम ही रहती है। पर घड़ियालों में लीवर सिरोसिस की बीमारी चौंकाने वाली घटना मानी जा रही है क्योंकि घड़ियालों के विशेषज्ञ बताते हैं कि पुस्तकों में लीवर सिरोसिस बीमारी से घड़ियालों की मृत्यु का उल्लेख नहीं है।

उक्त घोषणा उत्तर प्रदेश के वन संरक्षक सुखविन्दर सिंह ने कानपुर चिड़ियाघर के डॉ. यू. सी. श्रीवास्तव, डॉ. काजल यादव और डॉ. एल. राजा की पोस्ट मॉर्टम रिपोर्ट के आधार पर की थी। मृत घड़ियालों की पहली खेप उत्तरप्रदेश की सीमा में मिली थी।

चंबल का पानी ज़हरीला बताए जाने के साथ इस पानी की जांच जल विशेषज्ञों द्वारा की गई और उन्होंने पानी को पीने योग्य बताया।

अब उत्तर प्रदेश वन महकमा आशंका जता रहा है कि वायरल इन्फेक्शन से घड़ियालों की मौत हो सकती है। इसे सही साबित करने के लिए वन अधिकारी एक बीमार घड़ियाल की तलाश में हैं ताकि उसके खून के नमूने लेकर मौत की असलियत तक पहुंचा जाए। इधर मध्य प्रदेश का वन महकमा भी इन घड़ियालों की मौत का कारण वायरल इन्फेक्शन ही बता रहा है। लेकिन वह अभी तक अपनी बात को वैज्ञानिक दृष्टि से साबित करने में असमर्थ ही रहा है।

दूसरी ओर, अन्य जानकारों का दावा है कि घड़ियाल ठंडे खून वाले जानवर हैं। इसलिए ठंड के मौसम में ये खुद को गर्म रखने के लिए गहरे जल में चले जाते हैं। इस दौरान ये शिकार भी नहीं करते। केवल आराम फरमाते हैं। इस वजह से संक्रमित मछलियों को आहार बना लेने से इनमें खाद्य विषाक्तता की गुंजाइश बेहद कम है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली भारतीय वन्य जीव परिषद के पूर्व सदस्य और प्रसिद्ध वन्य जीव विशेषज्ञ डॉ. रामलखन सिंह का कहना है कि नदी के जल स्तर में कमी भी घड़ियालों

की मौत के पीछे अहम वजह हो सकती है। कुछ विशेषज्ञों का यह भी दावा है कि चंबल के घड़ियाल प्राकृतिक तरीके से नहीं पले-बढ़े हैं। कुकरैली और देवरी घड़ियाल प्रजनन केंद्रों में कृत्रिम रूप से पालन-पोषण के बाद इन्हें चंबल में छोड़ा गया। इस वजह से इनकी प्रतिरोध क्षमता कम हो गई है। लेकिन यह तथ्य भी उचित नहीं ठहरता क्योंकि यदि ऐसा होता तो चंबल में इस तरह से हर साल घड़ियालों के मरने का सिलसिला जारी रहता। तब घड़ियालों की संख्या दो हज़ार तक कैसे पहुंच पाती?

सबसे प्रमुख सवाल यह है कि घड़ियालों के शव रेत के भीतर कैसे पहुंचे। क्योंकि ये सब बालू हटाकर गड्ढों से निकाले गए हैं। इससे यह ज़ाहिर होता है कि इनके शिकार करने वालों या वन विभाग के कर्मचारियों ने घड़ियालों को दफनाने की कोशिश की है। चंबल के मछुआरे काफी बड़े जालों का इस्तेमाल मछलियां पकड़ने के लिए करते हैं और इनमें कई मर्तबा मछलियों के साथ घड़ियाल भी फंसे चले आते हैं। लेकिन एक साथ इतने घड़ियाल जाल में नहीं फंस सकते। इधर दबी जुबान और नाम न छापने की शर्त पर एक मछुआरे का कहना है कि दोनों राज्यों के वन अधिकारी अपनी गलतियों पर पर्दा डालने के लिए हकीकत को छिपाने की कोशिश कर रहे हैं। यदि रेत की और खुदाई की जाती है तो कई और घड़ियालों के शव भी मिल सकते हैं।

यदि वन विभाग की रिपोर्ट पर ही भरोसा करें तो चंबल के ज़हरीले पानी में घड़ियाल जैसे जलीय जीवों का ज़िंदा रहना भी मुश्किल हो गया है। घड़ियालों की मौत यदि लीवर सिरोसिस से हुई है तो यह एक भयावह खतरे का संकेत है। चंबल का पानी अगर घड़ियालों के लिए जानलेवा साबित हो रहा है तो मनुष्य की क्या बिसात? ***(स्रोत फीचर्स)***